

Buddhist Philosophy

-A Present Day Need



**A Proceedings of
National Conference on
Buddhist Philosophy-
A Present Day Need,
NCBP-2016**

March 12, 2016

Editors

A. P. Deshmukh

G. G. Muley

V. K. Nagale



**BUDDHIST STUDIES CENTER
SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444602 MS INDIA**

ISBN 978-93-5258-743-8

BUDDHIST STUDIES CENTER

Sant Gadge Baba Amravati University
Amravati-444 602 Maharashtra, India

- | | | |
|-----|---|---------|
| 47. | बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता नैतिकता के सदर्भ में
जयंत मनोहरराव धूल | 226-232 |
| 48. | बौद्ध धर्म में सम्यक दृष्टि का वर्तमान समय में उपयोगिता
फिरोज नंद | 233-237 |
| 49. | वर्तमान जगत में तृष्णा की समस्या और बौद्ध दर्शन के अनुसार उसका समाधान
मेघा मून | 238-241 |
| 50. | बौद्ध दर्शन के अनिश्चरवाद की वर्तमान स्थिती में आवश्यकता
किरण ज्ञानेश्वर वानखेडे | 242-244 |
| 51. | वर्तमान भारत में बुद्ध के समाजदर्शन की आवश्यकता
सुमन देवी | 245-251 |
| 52. | बौद्धकालीन महिलाओं की स्थिति – एक अध्ययन
प्रीति बागडे | 252-258 |
| 53. | संत कबीर पर बुद्ध तत्त्वज्ञान का प्रभाव : प्रासंगिकता
बालाजी गायकवाड | 259-267 |
| 54. | सामाजिक परिपेक्ष में शील की प्रासंगिकता
Archana Patil | 268-271 |
| 55. | बौद्ध दर्शन एवं तत्कालीन समाज व्यवस्था
RAMESH KUMAR | 272-277 |
| 56. | बौद्ध धम्म में महिलाओं की सामाजिक स्थिति
नीलीमा कृष्णकांत ताकसांडे | 278-281 |

बौद्धकालीन महिलाओं की स्थिति – एक अध्ययन

प्रीति बागहे

इतिहास विभाग

डॉ. हरीशचंद्र मोर केन्द्रीय वि. वि., सागर

तथागत बुद्ध ने लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व मानवता पर आधारित 'बुद्धधम्म' की स्थापना की। बुद्ध के युग तक वैदिक समाजदर्शन और उनके समकालीन जितने भी विचारक थे, उन्होंने महिलाओं के बारे में कोई ध्यान नहीं दिया। जिस कारण समाज का यह अंग अत्यंत पिछड़ा और पोषित हो गया था। नारी समाज की दयनीय स्थिति ने बुद्ध का ध्यान आकर्षित किया। बुद्ध ने कभी भी नारी और पुरुषों में भेद नहीं किया। वे नारित्व को ज्ञान की, अर्हत्व की प्राप्ति में, परमपान्ति निर्वाण की प्राप्ति में, बुद्धत्व की प्राप्ति में बाधक नहीं मानते थे।

भिक्षुणी बनने की अनुमति देकर तथागत ने नारियों को न केवल उसकी मुक्ति का मार्ग प्रपस्त किया, प्रत्युत यौन-भेद का हीनभाव समाप्त कर उन्हें स्वतंत्र प्रतिष्ठा प्रदान की। श्रीमति रीज डेविड्स के पद्यों में—“उस काल की नारी इस बात का गर्व तो अनुभव कर ही सकती थी कि कम से कम उसके अर्हन्त बन्धु, स्त्री-पुरुष का भेद किए बिना उसे एक चेतन प्राणी स्वीकार करते थे। इस प्रकार वह आत्मानन्द के मुक्त वातावरण में साँस लेती थी, और उस काल की नारी भी अपनी सम्यक् दृष्टि के कारण धर्म-साम्राज्य की समान रूप से भागीदार थी।”¹

बुद्ध ने अपने धम्म में केवल गरीब लाचार नारियों को ही सहारा नहीं दिया, बल्कि समाज में परपुरुषों द्वारा ठगी हुई, सगे सम्बंधी और पतियों द्वारा प्रताड़ित और मरी हुई संतानों के वियोग में पागल सी हुई नारियाँ भी धम्म की छाया में आकर, अपने प्रयत्नों से दुःख मिटाकर अर्हत हो गईं। दुर्बल नारियों में बुद्ध ने अनन्य आत्म विष्वास पैदा करके भिक्षुणी संघ के रूप में शरतीय समाज को दिखा दिया कि, नारी अवला नहीं होती, वह सबला ही होती है। सच्चे दिल से प्रयत्न किया तो धार्मिक प्रगति के आड़ में नारित्व नहीं आता, यह स्पष्ट करते हुए सोमा भिक्षुणी कहती है—“जब चित्त अच्छी प्रकार समाधि में स्थित है, ज्ञान विद्यमान है, और प्रज्ञा द्वारा धर्म का सम्यक् दर्शन कर लिया है, तो नारित्व इसमें हमारा क्या करेगा?”²

बौद्ध साहित्य का प्राचीन ग्रन्थ 'थेरीगाथ' में बुद्धकालीन 73 भिक्षुणियों के विचार संग्रहित हैं यह पुरा ग्रन्थ 522 पद्यमय पालि गाथओं में है, जिसमें उन भिक्षुणियों ने अपने पूर्व जीवन के बारे में और प्रवज्या ग्रहण करने के बाद मिले मानसिक संतोष के बारे में, अर्हतपद के सुख के बारे में खुलकर लिखा है। भिक्षुणी बनी हुई नारियाँ समाज के विभिन्न वर्गों से आयी थीं। बुद्ध ने केवल राज परिवार और धनी कुल की नारियों को ही दीक्षा दी, ऐसा नहीं है, बल्कि वेष्पा, गणिका, और दासी जैसी सभी स्त्रियों को धम्म में दीक्षा दी। बुद्ध ने जैसे कहा था कि—सागर में आने के बाद सभी नदियों का पानी एक जैसा हो